नूह

यह लेखा नूह और उसके धराने का है।
जब मनुष्य पृथ्वी पर बहुत बढ़ गए तो उन्होंने परमेश्वर की ओर से मुँह मोड़ लिया।
परमेश्वर ने इसे देखा और बहुत शोकित हुआ।
किन्तु परमेश्वर ने नूह पर भी दृष्टि डाली ...
नूह के तीन पुत्र थे - शेम, हाम और येपेत।
जल्दी करो भाईयों जरूरत का सामान लो और जल्दी घर वापस लौट चलो।
क्या इतना सारा सामान पिताजी ने लाने को कहा है ? मैंने तो कभी ऐसा नहीं देखा।
वे किसी सम्भावना के लिए कुछ तैयारी कर रहे हैं। कम लगभग पूरा हो चुका है।

उत्पत्ति 6-9

जरा इधर देखिए, सज्जनों!
मेरे पास स्त्रियों और पुरुषों का ऐसा चुनिन्दा समूह है जो आपकी सारी जरुरतो की पूरा करेगा...
नहीं, हम यहाँ गुलामों के लिए नहीं आए हैं
मेरे गुलाम बिलकुल नये हैं , हमारे सरदार ने हाल ही में इन्हें पकड़ा गया है -
नहीं हमें कोई दिलचस्पी नहीं हैं !
अरे, नूह के बेटों, मैं तो सोचता था कि तुम्हें गुलामों की जरूरत होगी।
हाँ, अपने पिता के लिए जो किला तुम तैयार कर रहे हो !
महामहीम, नूह नहीं चाहता कि उसे गुलाम खरीदने चाहिए ! सिवाय गाना गाने के !
चलो, इनकी बातों पर ध्यान मत दो !
ये लोग हँसी उड़ा रहे हैं क्योंकि ये समझ नहीं रहे।
शेम, मुझे भी समझ में नहीं आ रहा।
येपेत तुम जरा इन मवेशियों के पास ठहरो, तब तक हम इन लुहारों से मोलभाव कर लेते हैं।
ठीक है
मुझे लगता है कि तुम्हारे पास खर्च करने को कुछ सिक्के जरूर होंगे।
नहीं साहिबा।
मेरा मतलब सिक्के तो है परन्तु इन बातों के लिए नहीं...
मैं शादीशुदा हूँ।
तो क्या हुआ, मेरा व्यवहार ज्यादातर विवाहित पुरुषों से ही होता हैं...
मुझ पर भरोसा रखो, इन घोड़ो और पशुओ को यहाँ रहने दो और तुम मेरे संग आओ।
नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, हमें इन सबकी जरुरत हैं।
बहुत अच्छे ! तुम्हें मौका मिल रहा हैं ...
उत्पत्ति 6-9-10

...दोनों गाय ? क्या मेरे साथ मजाक कर रहे हो ?
अभी हमें जरूरत के और भी सामान लेने हैं।
सारे गाँव में इससे कम दम में ये सारा सामान नहीं मिलेगा, और ज़रा ये बढ़िया कारीगरी भी देखो।
सुनो, तुम्हारे पिता के मवेशी सारे इलाके में प्रसिद्ध हैं। उनके बदले ये तुम्हे दे दूँगा।
मेरी चार बीवियों और आठ बच्चे हैं। तीन बच्चे तो अभी पिछले साल ही पैदा हुए हैं -
हेय ! ओअहह !!!
येपेत !!!
कहाँ है वो ?
येपेत !!!
येपेत क्या तुम ठीक हो ?
वो हमारे मवेशी और घोड़े !
क्या हुआ ?
और अचानक पीछे से किसी ने हमला किया, यहाँ सिर पर चोट लगी है ... और ...
वो औरत अभी यहीं थी ... पर मैं उसके साथ नहीं गया।
लगता है वो लोग भाग गये, कोई भी दिखाई नहीं दे रहा है।
वो लोग अभी ज्यादा दूर नहीं गए होंगे, क्या मैं उनका पीछा करूँ ?
अगर हमारे पास हथियार होते, तो उनका पीछा कर सकते थे। पर हमारी तलवारें तो....
- घोड़ों पर ही रह गई, मुझे माफ़ कर दो ...
कोई बात नहीं, शुक्र मनाओ कि तुम जिन्दा बच गये, वरना वो बड़ी आसानी से तुम्हें मार भी सकते थे।
अब हमें खाली हाथ ही घर जाना पड़ेगा।
चलो कम से कम खाना तो खा ही लेते हैं, खाली पेट तो घर जाने से रहे।
मेरे बटुए में कुछ सिक्के हैं।

भोजन और पानी, या सिर्फ पानी ?
हमारा भोजन तो -
...घोड़ों के साथ ही
दोनों ले आओ।
मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ...
अब छोड़ो भी येपेत - इससे तुम्हारी कोई गलती नहीं।
अरे देखो भाइयों ! ये तो नूह के पुत्र है न !
दुनिया की सबसे बड़ी नाव को बनाने वाले !
जब ये लोग सूखे मैदान में नौका बनाने का काम पूरा कर लेंगे तो फिर एक बहुत बड़ा अस्त-बल बनाएंगे जिसमें पाँच सौ घोड़ो को रखा जाएगा...
फिर ये लोग दुनिया की सबसे बड़ी मिनार भी बनाएँगे...
... झील के नीचे।
वो भी गुफा में !
अच्छा हुआ कि हमारी तलवारें हमारे घोड़ो पर ही रह गई, नहीं तो...
अब क्या करें !
मुझे तो विशवास ही नहीं हो रहा कि ये लोग इस तरह हमारा मज़ाक उड़ाएँगे।
काश कि ये समझ पाते कि परमेश्वर इनके पापों से कितना नाराज होगा -
...ये लोग अपने बुरे काम नहीं छोड़ेंगे - करते ही रहेगें।
हमारे पिता ने कितनी बार इन्हें बुराई से फिरने को कहा, लेकिन ये नहीं सुनते ?
अब पिताजी क्या करने वाले है ?
जरा सुनो ! हाँ तुम दोनों !
क्यों मुसीबत में पड़ना चाहते हो - नूह के बेटों ?
नहीं हम तो तुम्हें एक उपहार देना चाहते हैं ?

उपहार ?
हाँ उपहार। समझ ! और बुद्धि का उपहार।
हंहह ?
चलो तुम इन्हें बताओ।
हाम, लेकिन इससे क्या फायदा ?
बस इन्हें समझा दो।
पिताजी कितनी बार समझा चुके हैं. उल्टे ये लोग उनका मज़ाक उड़ाते हैं। ये लोग मेरा भी मज़ाक उड़ाएँगे।
फिर भी समझा दो शेम ...
पिताजी तो इन्हें समझाएँगे, फिर मैं क्यों ?
शायद इस बार ये लोग समझ जाएँ।
कृपया मेरी कहानी सुनो।
मेरे पिता की कहानी। इस कहानी को ध्यान से सुनो, क्योंकि ये कहानी, आपकी भी हैं ...
आपको पता है, मानव की बुराईयों का सिलसिला प्रथम माता-पिता के समय से ही शुरू हो गया था।
उन्होंने परमेश्वर को दिए, एक मात्र नियम को तोड़ा और पाप को इस जगत में ले आए।
और उस दिन से ही हम सभी ने परमेश्वर से मुहँ मोड़ लिया और उस से दूर होते चले गए।

इसलिए हम सबको यह चुनाव करना है कि हम परमेश्वर को चुने और उसके मार्ग पर चलें ?
या फिर हम अपना रास्ता अपने आप चुनें ?
अगर हम आदम और हव्वा के पुत्रों के विषय में विचार करें तो पाते हैं कि उन्होंने अपना रास्ता खुद चुना।
हाबिल जिसने कैन के जलन और गुस्से के कारण अपना जीवन खोया।
और कैन जिसने ईर्षा और घमण्ड के साथ जीवन बिताया।
हम भी ऐसा चुनाव कर सकते हैं और परमेश्वर हमारी बुराईयों और हमारे चुने रास्ते को देखता है।
जब मानवजाति ने परमेश्वर से मुहँ मोड़ लिया तो परमेश्वर का हृदय दर्द से भर गया, ठीक उसी तरह जैसे किसी भी पिता का हृदय दर्द से भर उठता है।
अतः परमेश्वर ने सोचा कि मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा, क्योंकि मैं उसके बनाने से पछताता हूँ।
अरे नूह के पुत्रों, तुमने ये कैसे जान लिया कि परमेश्वर ने एसा सोचा था।
क्योंकि हम नूह के पुत्र है
तुम लोग हमारे पिता नूह को जानते हो।
हमारे पिता बुराई से परे एक खरे व्यक्ति हैं, जो लोगों का आदर करते है और परमेश्वर का भय मानते है।
और आप यह भी अच्छी तरह जानते है कि हमारे पिता धर्मी और खराई से चलने वाले व्यक्ति हैं।
निष्पाप नहीं किन्तु हमारे सृष्टिकर्ता परमेश्वर के रास्ते पर बहुत सच्चाई से चलने वाले व्यक्ति है।
और परमेश्वर भी नूह की धार्मिकता को जानता है।
और इसलिए परमेश्वर ने हमारे पिता से बातें की हैं...
नूह, में सब प्राणियों का अन्त करने पर हूँ, क्योंकि पृथ्वी उन सब के उपद्रव से भर गई हैं।
और अब मैं उन्हें पृथ्वी समेत नष्ट करने पर हूँ।
इसलिए अब तू साईप्रस वृक्ष की लकड़ी से एक बड़ी नौका बनाना, उसमे कोठरियाँ बनाना और अन्दर- बाहर उस पर राल लगाना।
इस ढंग से तू उसको बनाना।
उत्पत्ति 6-13

और उसकी लम्बाई 450 फुट होगी, चौड़ाई 75 फुट, और उँचाई 45 फीट होगी, उसमें तीन तल होंगे।
और जब परमेश्वर जल-प्रलय से पृथ्वी को नष्ट कर रहा होगा?
हमारा परिवार इस बड़ी नौका के अन्दर होगा?
ओह! मैं ने आप सब को जानवरों के बारे में तो बताया ही नहीं।
जानवर?
हाँ - सब प्रकार के पशु और पक्षियों में से दो-दो अर्थात नर और मादा हमारे साथ जहाज में जीवित रहेगें।
नूह! ये सब पागलपन लग रहा है! फिर भी मुझे तुम पर विश्वास है!
तुम एक विवेकशील इंसान हो, कोई भ्रम पैदा करने वाली नहीं।
और तुम एक भले व्यक्ति हो जो झूठ नहीं बोल सकते।
परमेश्वर ने अवश्य ही तुम से बातें की होगी क्योंकि इस संसार में और कोई तो उसकी सुनेगा नहीं।
और इस प्रकार नूह ने वही किया जो परमेश्वर ने उससे कहा।
उत्पत्ति 6-19

यह एक शुरुआत है!
एक अच्छी शुरुआत। यह अच्छा होगा कि मैं अपने काम पर वापस जाऊँ!
दिन महीनों में बदल गए...
और महीने वर्षों में बदल गए...

नूह ! नूह ! जरा सोचो क्या होने वाला है ?
इस काम में तुम्हें कुछ और सहायक मिलने वाले है !
मैं ने तुम्हें बोला है मेरी प्रिय, कि इस काम के लिए हमें किसी को किराये पर या खरीदकर सहायक नहीं रखना !
मेरा मतलब यह नहीं था !
तो क्या मतलब है तुम्हारा ...
ओह !
ओह !!!
टूट गया
क्या मतलब है तुम्हारा...
हाँ नूह !
हाँ !!!
मैं और मेरे भाई इस जीवन के आदि हो गए है।
हम अपने पिता के इस काम को तब से देखते आ रहे हैं जबसे हम ने बोलना सीखा।
फिर भी कई बातें हैं जिन्हें हम समझ नहीं पाए।
हम अपने पिता के इस दर्शन में उस समय से हिस्सा ले रहे हैं जब से हम ने चलना सीखा हैं।
हम सिर्फ इतना जानते हैं कि परमेश्वर ने हमारे पिता को जहाज बनाने की आज्ञा दी है और हम सारे भाई इस कार्य को पूरा करने में यथाशक्ति अपने पिता की सहायता करेंगे।

मुझे और मेरे भाईयों को पत्नीयाँ भी ऐसी मिली हैं, जो हमारे पिता के इस लक्ष्य की सराहना करती हैं।
और जो काम हम करते है उसे सारा परिवार मिलजुल कर पूरा करता है।
परिवार ? हाँ, एक अलग परिवार !
तुम्हारी पत्नियाँ - ऐसी स्त्रियाँ है जिन्हें पालन-पोषण करने वाले पति कहीं और मिले नहीं होगें !
उनके लिए तुम जैसों से विवाह करने को सिवा और कोई दूसरा चारा भी नहीं रह होगा !
हमारी पत्नियाँ हमारे साथ खुशी से काम में हाथ बँटाती हैं, और जब जय-प्रलय आएगा तो वो हमारे साथ ही जहाज के अन्दर जाएँगी !
तुम लोगों ने उन्हें डराया होगा कि हमसे शादी कर लो वरना एक भयानक जल-प्रलय में डूब मारेगी !
जैसा बाप वैसे बेटे !
तुम लोगों ने तो अपना जीवन बरबाद कर लिया नूह के बेटों !
और जिंदगी तो हमारी भी बरबाद हो रही है मगर खूबसूरत औरतों, बढ़िया शराब और भोग-विलास जैसी बातों में !
माफ़ करना भैया, मुझे आपको ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए था।
कोई बात नहीं येपेत, ये लोग दुष्ट और मूर्ख हैं।
ये लोग समझना ही नहीं चाहते।
आओ ! भाईयों घर चलें, येपेत तुम परेशान मत हो, चलो घर चल कर, तुम्हारी पत्नी के बनाए स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेते हैं।
उत्पत्ति 6:18

शेम, पूर्ति का सामान कहाँ है ?
हम लोग दिन दहाड़े लुट गये !
हमें तुम्हारे साथ जाना चाहिए था।
अब तुम्हें पता चल गया होगा कि तुम इस नगर में सुरक्षित नहीं हो !
शुक्र है कि जान बच गई !
तुम्हें ज्यादा चोट तो नहीं आई न?
बहुत बुरा हुआ, उस नगर के लोगों की कितनी चेतावनी दी गई कि आने वाले भयानक खतरे से बेचो, मगर वो बुराईयों से बाज नहीं आते....
माँ, वो हमारे पशुओ को भी ले गए, पिताजी ने जो सामान मँगवाया था वो भी नहीं आ सका।
तुम सही सलामत वापस आ गए, यही काफी है मेरे बच्चो।
तुम्हारे पिता वहाँ ऊपर काम कर रहे है, उन्हें तुम्हारी सहायता की ज़रुरत हैं।
अच्छा हुआ कि तुम लोग उत्तरी दिशा के गाँव की ओर नहीं गए सुना है, वहाँ पहाड़ी कबिले के लोगों ने कल कुछ लोगों को मार डाला है।
मैं डर रही थी कि कहाँ तुम लोग उस तरफ तो नहीं निकल गए।
उत्पत्ति 6:5

पिताजी, आज आपको हमारी सहायता कहाँ चाहिए?
ठक
हा! हा हा हा हा!!!
सहायता? मुझे तुम्हारी सहायता नहीं चाहिए
अब नहीं!
सहायता नहीं चाहिये?
कार्य पूरा हो गया! कार्य पूरा चुका है!
परमेश्वर ने जब नूह से एक नौका बनाने को कहा और उस नौका में हर प्रकार की भोजन वस्तु जमा करने के लिए कहा।

नौका का कार्य पूरा होने पर, परमेश्वर ने एक बार फिर नूह से बात की।
मैंने कभी नहीं सोचा था कि काम पूरा हो जाएगा!
मेरी पूरी जिंदगी में!
कल हम लोग क्या करने वाले है?
मुझे तो आज रात भी लकड़ी काटने के सपने आने वाले है।
सब शांत हो जाओ।
नूह, कहाँ है पानी, जिसे लाने के लिए मैंने तुम्हें भेजा था?
तुमने पुछा, कहाँ है पानी? हा! वो आ रहा है!
मैंने फिर परमेश्वर की आवाज़ को सुना!
परमेश्वर ने मुझे तुम लोगों को जहाज़ में ले जाने को कहा है।
हमें अपने साथ सभी जातियों के शुद्ध पशुओं के सात-सात जोड़े ले जाने है अर्थात नर और मादा --
-- हमें अपने साथ सभी जातियों के अशुद्ध पशुओं के दो-दो जोड़े ले जाने है अर्थात नर और मादा --
-- कि उन विभिन्न प्रकार के पशुओं का वंश सारी पृथ्वी के ऊपर बना रहे।
सात दिनों के पश्चात परमेश्वर चालीस दिन और चालीस रात निरंतर पृथ्वी पर वर्षा भेजेगा।
और फिर उसने यह भी कहा है कि पृथ्वी के ऊपर जितने भी जीवित प्राणी उसने बनाए है उन सब को मिटा डालेगा।
हम कैसे इतने सारे पशुओं को एकत्र कर पाएगें?
हमारा काम क्या कभी खत्म हो पाएगा?
सात दिन - सिर्फ सात दिन!?!

उत्पत्ति 6:19–22

चलो अन्दर, ऊन के नन्हें गोलों !
भाईयों, परमेश्वर हम से इतने सारे जानवरों को इकट्ठा करने की उम्मीद कैसे कर सकता है, जब कि हमारी अपनी भेड़े ही जहाज़ में नहीं जा रहीं !
हमें कभी भी इन भेड़ों को हाँकने में इतनी परेशानी नहीं हुई !
जरा इन सातों को देखो जो अभी अभी जहाज़ के अंदर गई है !
हमने तो इन्हें नहीं हाँका, ऐसा लगता है कि जैसे कोई आतंरिक शक्ति उन्हें सही जगह ले जा रही है !
बाकी सबको नहीं !
जरा...जरा देखो इन पशुओं का ऐसा व्यवहार प्राकृतिक नहीं है !
हाँ, मैं भी यहीं कहना चाहता था।

उत्पत्ति 6:19–20

आज भी जानवरों को देखने के लिए भीड़ इकट्ठा हो गई है जैसे पिछले छः दिनों से लोग इकट्ठे हो रहे हैं।
इन्हें अब भी संदेह हैं ?
पुत्र, इन्होंने नहीं सुधरने का फैसला कर लिया है।
इन्होंने पहले भी विश्वास नहीं करने का फैसला किया था, और ये अब भी विश्वास नहीं कर रहे।
यही तो मेरी समझ में नहीं आ रहा।
परमेश्वर इन पशुओं को हमारे पास ला रहा है।
परमेश्वर महान सामर्थी है, मेरा मतलब है, उसने सारी दुनिया को बनाया है।
तो उसने हमारे लिए इस जहाज को भी क्यों नहीं बना दिया ?
पुत्र, मैंने इस बारे में वर्षो तक विचार किया है।
इन पशुओं को देखो। ये यहाँ आए हैं क्योंकि आने के लिए परमेश्वर के हाथ ने बाध्य किया है।
पर हम बाध्य नहीं किए गए। परमेश्वर ने मुझे जहाज़ बनाने के लिए कहा, उसने मुझे अपने घराने को जहाज़ पर से जाने को कहा।
परमेश्वर ने मुझे ज्ञान दिया, मुझे सिखाया, मुझे चुनाव करने दिया।
अच्छा अब सब अपने अपने बिछोनों पर जाओ !
कल वह दिन है जिस के लिए हमने सालों मेहनत की हैं !
अब हमें आराम की जरूरत है !
तो क्या परमेश्वर ने पिताजी को इसलिए चुना क्योंकि वह जानता था कि पिताजी का चुनाव क्या होगा ?
मैंने यह जानने का साहस नहीं किया। सिर्फ इतना अच्छी तरह से जानता हूँ कि हम लोगों ने भी अपना चुनाव किया।
और आज मैं जानता हूँ मैंने सही चुनाव किया हैं।
यह सब कुछ वैसे ही हो रहा है जैसा परमेश्वर ने कहा था समस्त पशु जिन में जीवन का श्वास है दो-दो करके आयेगें ...

...और सातवें दिन...
आज कोई भी पशु पंक्ति में नहीं है।
जहाज़ में कितने हज़ार पशु पक्षि आ चुके हैं ?
मैंने बीस के बाद गिनना बंद कर दिया था।
मतलब बीस हज़ार ?
नहीं केवल बीस। क्योंकि मैं तभी समझ गया था कि सारा मामला मेरी कल्पना से भी अधिक बड़ा है।
उन्हें देखो।
अभी भी उन्हें विश्वास नहीं आ रहा है। है न ?
आज वह दिन आ गया !
दरवाज़ा अभी भी खुला है !
मूर्ख लोगों ! ज़रा उस बदबू के बारे में सोचों जिसमें तुम लोग वहाँ अन्दर रहने जा रहे हो !
अगर मैं वहाँ पाँच मिनट अन्दर रहा, तो गोबर की दुर्गन्ध मेरे शरीर में इस तरह बस जाएगी कि कोई भी औरत मेरे पास हफ्ते भर तक नहीं भटकेगी।
कम से कम तुम्हें कोई बहाना तो मिला !
हाँ बिलकुल, इन लोगों मुताबिक शरीर की बदबू दूर करने के लिए नहाने के लिए पर्याप्त पानी भी बरसने वाला है !
ये... क्या बारिश ?
बारिश हो रही है !
बारिश हो रही है !
वे लोग हमारा मज़ाक उड़ा रहे थे पर अब पाप की दुर्गन्ध, बुराई की गन्दगी पृथ्वी पर से धुल जाएगी, है न ?
...बाढ़ का पानी बढ़ रहा है।
चलो अन्दर ! अन्दर चलो !
उत्पत्ति 7:16
और परमेश्वर ने जहाज़ का द्वार बंद कर

क्या... यह नहीं हो सकता !
नहीं... नहीं... नहीं!!!
नूह ने कहा था ! हम जानते थे कि वह हर बात में धर्मी और विश्वास योग्य है !
और अब, वैसा ही हो गया है... हम लोगों ने क्यों विश्वास नहीं किया ?!?
आओ अब हम ऊँचे स्थानों पर चले जाए !
क्यों भाई ? सब कुछ वैसा ही घटित हो रहा है जैसा नूह और उसके पुत्रों ने कहा था।
समझदार के लिए इशारा काफी है कि आगे सब कुछ वैसा ही होने जा रहा है...
...और इसका मतलब भी साफ़ है सारे दुष्ट पापियों का विनाश।
तुम क्या सोचते हो कि वे लोग भी यहाँ होते अगर उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी होती, जैसे हमारे पिता ने मानी ?
उन्होंने परमेश्वर का सन्देश पिताजी के शब्दो में सुना, और पिताजी की ज़िन्दगी के द्वारा परमेश्वर को देखा है।
मैं नहीं देख सकता...
ये शोर... बारिश की तेज़ आवाज़ तो गर्जन के जैसी है !
बाहर क्या हो रहा है ?
आसमान से पानी बरसता ही जा रहा है और जल पृथ्वी पर बढ़ता जा रहा है।
यह तो बहुत डरावना है।

उत्पत्ति 7:11

कितने दिन हो चुके, येपेत ?
बाईस दिन।
तीन दिन पहले, मैंने एक पेड़ का ऊपरी हिस्सा देखा था जो ज़रूर किसी ऊँचे पहाड़ की चोटी पर लगा होगा।
और अब जहाँ तक नज़र जाती है पानी ही पानी है !
क्या तुमने सोचा है कि हमारे लिए कितनी कठिनाई होने वाली है जब हम इस जहाज़ से बाहर जाएँगे ?
मैं नहीं सोचता कि आने वाली कठिनाई पिछली कठिनाईयों से ज्यादा होगी, जब हमें इस नौका को बनाना था।
और अब हमें हिसंक आक्रमणों का भी खतरा नहीं रहेगा जो आस-पास के कबिलों और गाँवों के लोगों द्वारा किया जाता रहा था !
मैं अभी तक ये समझ नहीं पाया ये जानवर इतने शांत कैसे है, मैंने एक शेर को उन सात भेड़ों के बीच आराम से सोते देखा है, और शेर और मेमना दोनों ही बिलकुल शांत थे -
हुंह ! तुमने कुछ सुना ?
मैंने कुछ नहीं सुना।
बिलकुल !
चालीस दीनों के बाद वर्षा बंद हो गई...

...और एक सौ पचास दिनों के पश्चात...
- हमें इस बात पर गौर करना होगा कि हम इन्हीं कामों में उलझे न रह जाएँ।
शायद परमेश्वर ने इसलिए हमें इतने सारी पशु दिए हैं।
खाने के लिए?
मैं जानता हूँ कि तुम्हारी नज़र उन बड़े, रंगीन पक्षियों पर हैं, येपेत, पर तुम इतने बुरे ख्याल मत रखो।
मैंने तो बस सम्भावना ज़ाहीर की, हम्म।
पशुओं को खाने की बात नहीं, पर हो सकता है कि ये समुद्री यात्रा ज्यादा लम्बी हो, हमारी समझ से ज्यादा लम्बी।
ये तो पहले से ही बहुत ज्यादा लम्बी यात्रा लगा रही है,
लेकिन परमेश्वर ने हमें इस जहाज़ पर बेसहारा छोड़ देने के लिए तो नहीं बचाया।
वैसे हमें भोजन की कमी तो नहीं होने वाली।
ऐसा इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने हमारा ध्यान रखा है, न कि इसलिए कि हमने अपना हिसाब किताब लगाया है कि कितनी भोजन सामग्री चाहिए।
भाइयों, मुझे इस जहाज़ पर परिवार के पालन-पोषण का विचार कुछ उचित नहीं जान पड़ता।
तुम्हें क्या लगता है में ऐसा होने दूँगा?
मेरी पत्नी तो बिलकुल नहीं चाहती कि ऐसा हो।
अपनी पूरी ज़िन्दगी में हमने जो सीखा है, वो है इस नाव को बनाना।
इस बात की कल्पना करो कि जीवन भर जो बात सीखी गई वो है एक नौका -
क्या...
आह!
व्यूहह !!!
उत्पत्ति 8:1-4

जहाज़ सौ दिनों से ज्यादा समय तक भूमि पर टिका रहा जब नूह ने एक कौवा अपने बनाये जहाज़ में से उड़ा दिया।
पिताजी, आपने ऐसा क्यों किया ?
कौवा ऊँचाई पर से सूखी भूमि देख सकता है, अगर वह वापस लौट आता है तो हम यह समझ सकते हैं की जल अब तक कम नहीं हुआ -
नहीं पिताजी, मेरा मतलब यह था कि हमारे पास कौवे सिर्फ दो हैं, अगर उनमें से एक को भेज दिया जाया और उसे कुछ हो गया तो...
अरे, हाँ, तुम्हारी बात भी सही है।
शायद अगली बार मैं एक कबूतर भेजूँ, हमारे पास कबूतर तो सात है...
किन्तु कौवा सूखी भूमि न पाकर वापस जहाज़ पर लौट आया।
एक सप्ताह बाद...
आप परेशान क्यों है, पिताजी ?
पिछले सप्ताह एक कौवा उड़ाया गया था, किन्तु इस से कुछ पता नहीं नहीं चल पाया।
हाँ यही जानने के लिए तो मैं उत्सुक हाँ, कि बाहर क्या हालत हैं, जब तक कुछ पता न चले, जहाज़ का दरवाज़ा खोलने का खतरा मोल नहीं ले सकता।
उत्पत्ति 8:6-9

दूसरा सप्ताह...
आपकी राय में क्या यह सही समय होगा, पिताजी?
इन्हीं दिनों में ऐसा होना चाहिए। मुझे मालूम है।
देखो, वह वापस लौट आया।
हाँ पिताजी, वह वह लौट आया है! और देखिए उसने अपनी चोंच में कुछ पकड़ रखा है!!!
एक जैतून का पत्ता!
एक जैतून का पत्ता!
नूह ने एक सप्ताह और प्रतीक्षा की और तब...
आज मुझे ऐसा महसूस हो रह है जैसे वह कबूतर वापस नहीं लौटेगी!
उस कबूतर को टिकने की जगह मिल जाएगी, तुम देखना ऐसा ही होगा!
अभी भी हम लोगों को लम्बी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है जब तक भूमि अच्छी तरह सूख नहीं जाती, हमें और जानवरों को यही रहना होगा, पर -
-- पर कोई बात नहीं, हम लोग तब तक इंतजार कर लेंगे, और इतना समय नहीं लगेगा जितना हमने जहाज़ के बनाने के लगा, पिताजी!
उत्पत्ति 8:10-12

तीन सौ छियत्तर दिनों पश्चात परमेश्वर ने जहाज़ के दरवाज़े को खोल दिया
समय हो गया, पुत्रों।
आज हमें यह देखना है कि भूमि अच्छी तरह से सूख गई है या नहीं!
मैं तो भूमि पर उतरने को तैयार हूँ!
ओह नूह! देखो!!!
...पृथ्वी पूरी तरह सूख चुकी थी।
और तब परमेश्वर ने कहा:
तू अपनी पत्नी, और पुत्रों और बहुओं समेत जहाज़ में से निकल आ।

सब भाँति-भाँति के जीव-जन्तु जो तेरे संग, क्या पक्षी, क्या पशु और जसब प्रकार रेंगने वाले जन्तु, जो पृथ्वी पर रेंगते है, उन सब को अपने साथ निकाल ले आ कि वे पृथ्वी पर फले-फूलें और पृथ्वी पर फैल जाएँ।

उत्पत्ति 8:17-19

पुत्रों ! सभी प्रकार के शुद्ध पशुओं में से एक-एक लेकर उन्हें एकत्रित करो !
क्यों, पिताजी ?
उन्हें हमारे परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया जाएगा।
अब, आग ले आओ।
एक कबूतर पिताजी।

उत्पत्ति 8:20

फलो-फूलो और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।
तुम्हारा डर और भय पृथ्वी के सब पशुओं और आकाश के सब पक्षियों और भूमि पर सब रेंगने वाले जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा।
वे सब तुम्हारे वश में कर दिए जाते हैं।
सब चलने वाले जन्तु तुम्हारा आहार होंगे।
जैसा तुम को हरे-हरे छोटे पेड़ दिए थे वैसा ही सब कुछ देता हूँ।
और निश्चय ही मैं जीवन का लेखा लूँगा।
सब पशुओं में से भी उसे लूँगा।
और मनुष्य के प्राण का बदला, मैं उसके संग भाई-बन्धु से लूँगा।
जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है।
और तुम फूलो-फलो, और बढ़ो और पृथ्वी पर बहुतायत से सन्तान उत्पन्न कर के उस में भर जाओ।

उत्पत्ति 9:1-7

मैंने बादल में अपना मेघधनुष रखा है, वह मेरे और पृथ्वी के बीच मैं वाचा का चिन्ह होगा।
और जब मैं पृथ्वी पर बादल फैलाऊँ तब मेरी जो वाचा तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के साथ बाँधी है, उसको मैं स्मरण करूँगा :
तब ऐसा जल-प्रलय फिर न होगा जिससे सब प्राणियों का विनाश हो।
बादल में जो धनुष होगा मैं उसे देख कर यह सदा की वाचा स्मरण करूँगा, जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर के सब जीवित शरीरधारी प्राणियों के बीच बाँधी है।
उत्पत्ति 9:11-17

नूह और उसका परिवार अब काम करने के लिए तैयार हैं।
पृथ्वी पर श्रम कार्य।
गृह निर्माण कार्य।
पशु-पालन
नई ज़िन्दगी की शुरुआत।
भाईयों, एक या दो दिन में पूरा हो जाने वाला काम करना बहुत अच्छा एहसास दे रहा हैं?
ऐसा काम जिसमें पैंतालिस फुट उँचे ढाँचे पर चढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती, काम करना सचमुच बहुत अच्छा लग रहा हैं!
अगर सोचा जाए तो, इस तम्बू और नाव को बनाने का कारण एक ही हैं : सूखा रहना!
और नूह ने अंगूर की बारी लगाई।
शराब पीकर, वह मतवाला हो गया?
ममम
बढ़िया मीठी।
उत्पत्ति 9:20-21

पिताजी ?
माँ कह रही है कि -
ओह पिताजी, ये क्या !
मैं उम्मीद कर रहा था कि वे सब पक्षी यहीं होंगे।
लग रह था उनका भाँस बढ़िया होगा, पर अन्य पशुओं की तरह वे भी चले गए।
हाम, क्या गड़बड़ है ?
पिता जी से पूछो क्या गड़बड़ है !
जिस अंगूर की बारी को पिता जी ने लगाया उससे फसल प्राप्त हुई है, पिता जी ने उसका सेवक किया है, ज़ाहिर है, वो नशे में है !
और अभी वो तम्बू में, नग्न अवस्था में लेटे हुए है !
स्वयं चलकर देख लो !

उत्पत्ति 9:22

भाईयों, मैं यह सोच भी नहीं सकता, कि जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो जो पहला नग्न होने का एहसास उन्हें कैसा हुआ होगा।
पर हमारे पिता... वह तो अपनी पीढ़ी के एक ही धर्मी जन थे!
वह जिसे मानवता को बचाने के लिए चुना गया, जिसने ऐसी बुराई से मानवता को बचाया जिससे परमेश्वर शोकित था!
कई पापी गुजर गए, पाप नहीं गया।
हम अभी भी ज़िन्दा है।
उन्हें देखना जमत, येपेत हमें उनकी निर्लज्जता देखने की कोई आवश्यकता नहीं।
क्या, क्या हुआ? शेम का कपड़ा मुझ पर क्यों है?
नूह तुम नशे में चूर, नग्न अवस्था में लेटे हुए थे।
सम्भवतः तुम्हारे पुत्रों ने तुम्हें देख लिया हो और हाम तुम्हें उस घृणित अवस्था में देख चला गया, पर तुम्हारे अन्य दो पुत्रों ने तुम्हारी नग्नता को ढाँप दिया।
हाम? हाम? मैं उसे मुझे उघाड़े छोड़ जाने के लिए, शाप देता हूँ!
परमेश्वर शेम और येपेत को आशीषित करे कि वे मेरी सहायता के लिए आए!
हाम दासों का दास हो! और परमेश्वर अन्य दोनों को ऊँचा उठाए!
नूह, हाम ने तुम्हारे हाथों में शराब की थैली नहीं दी थी।
हाम ने तुम्हें मतवाला नहीं बनाया तुम्हीं होश खो बैठे थे। हाम ने तुम्हारे वस्त्र नहीं उतारे।
आखिर जिन बातों से हम बचे रहे, उन में मेरे बेटे और मैंने गलत चुनाव किया!
उत्पत्ति 9:23-27

और नूह और उसका घराना बढ़ता गया। उसके पुत्रों के भी पुत्र हुए।
पिताजी! लड़का पैदा हुआ है! हमने इसका नाम आराम रखा है!
मेरी पत्नी भी ठीक है, स्त्रियाँ उसकी देखभाल कर रही है!
मैं चाहता हूँ कि आप अपने पहिले पोते को देखे!
आराम।
एक बुराई से भरी पीढ़ी गुजर गई, पर हमारी-बुराई नहीं गई।
हमारे और परमेश्वर के बीच एक वाचा ठहरी है कि परमेश्वर फिर कभी भी पृथ्वी को जल-प्रलय से नाश नहीं करेगा।
पता नहीं, परमेश्वर आनेवाली पीढ़ियों को उनके पापों से शुद्ध करने के लिए कैसी वाचा ठहराता है?
और जल-प्रलय के बाद, यह पीढ़ी, पृथ्वी भर में दुनियाँ के देशों में फैल गये...
उत्पत्ति 9:19, 28